B.A. III Honours
Paper IV
M.A JOHN

सत्याग्रह

सत्याग्रह एक नैतिक शस्त्र है जिसके द्वारा विरोधियों का हृदय बदलने का कार्य किया जाता है। शाब्दीक रूप से सत्य के लिये आग्रह करना ही सत्याग्रह है। लेकिन गांधी जी के अनुसार सत्याग्रह वह प्रयत्न है जो प्रेम और त्याग के द्वारा सत्य को पाने के लिये किया जाता है। इस शब्द का प्रयोग गांधी जी ने अफ्रीका में किया था। उन्होंने इसके द्वारा हिंसक जगत को अहिंसा का शिक्षा दी साधारण भारतीय के लिये यह अंग्रेजी साम्राज्य के विरुध स्वतन्त्रता की लड़ाई का तरीका था।

एन० के० बोस के अनुसार "सत्याग्रह अहिंसक तरीकों द्वारा युद्ध का संचालन है।"

डा० कृष्ण लाल श्रीधानी के अनुसार "सत्याग्रह अहिंसक और सीधी कार्यवाही है।"

गांधी जी के शब्दों में "प्रेम व त्याग द्वारा सत्य सिद्धि के लिये प्रयत्न करना ही सत्याग्रह है।"

सत्याग्रह वास्तविक रूप से एक युद्ध है जो बिना हथियार, बिना रक्तपात, तथा बिना हानि पहुंचाये चलता रहता है। यह युद्ध वीरों द्वारा लड़ा जाता है यह कायरों का युद्ध नहीं है। यह दुख उठाने का मार्ग है दूसरों को कष्ट पहुंचाना इसका उद्देश्य नहीं है। गांधी जी सुकरात, प्रह्लाद और मीरा जैसे व्यक्तियों को सत्याग्रही मानते थे जिन्हें अपने पीड़कों के प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं थी। इसमें किसी एक पक्ष की विजय तथा दूसरे

को पराजय नहीं बल्कि सत्य की विजय तथा असत्य की पराजय होती है।

सत्याग्रह एक आदर्श है जिसका प्रयोग सरकार, कौम, जाति, व्यक्ति विशेष, समूह सबके विरुद्ध हो सकता है बशर्ते वह दूषित हो। इसका प्रयोग शासन की अत्याचारी नीतियों, सामाजिक कुरीतियों, अस्पृश्यता, सम्प्रदायिकता, आदि सभी के विरुद्ध किया जा सकता है।

गांधी जी ने बुराई और अन्याय के विरुद्ध लड़ने का सत्याग्रह को एक अस्त्र बताया है। उन्होंने इसके कुछ गुणों की भी चर्चा की है। सत्याग्रही वही हो सकता है जो सत्य पर चलता हो, अनुशासन में रहने का अभ्यस्त हो तथा मन, वचन, और कर्म से अहिंसा में विश्वास रखने वाला हो वह कभी अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये छल, कपट, झूठ या हिंसा का सहारा नहीं लेता है।

गांधी जी ने इसके सात स्वरूपों की भी चर्चा की है।

(1) असहयोग : 1920-22 में भारत में ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिये गांधी जी ने असहयोग मार्ग को ही अपनाया था जिसने ब्रिटिश शासन की जड़े हिला दी। वह इसे कानूनी रूप से सही मानते थे।

(2) सविनय अवज्ञा। गांधी जी इसे पूर्ण प्रभावशाली और सैनिक विद्रोह का रक्तहीन विकल्प मानते हैं।

सविनय अवज्ञा का अर्थ अनैतिक नियम को भंग करना है। यह एक अहिंसक क्रांति है। तथा असहयोग की अन्तिम स्थिति है। civil disobedience कई प्रकार का हो सकता है। जैसे कर न देना, राज्य सत्ता को मनमानी से मना करना या एक एक करके सारे अनैतिक कानूनों का विरोध करके सरकारी तन्त्र को ठप कर देना।

(3) हिजरत, इसका अर्थ स्वैच्छिक देश निकाला या व्यक्ति द्वारा अपना स्थायी निवास छोड़ कर कहीं और चले जाना। गांधी जी ने 1918 और 1939 में जनता को हिजरत की सलाह दी थी।

(4) उपवास ! सत्याग्रह का एक दूसरा रूप व्रत अथवा उपवास है। यह सबसे शक्तिशाली अस्त्र है जिसका प्रयोग व्यक्ति स्वयं ऊपर लागू करता है। इसका उपयोग आत्म शुद्धि, स्वास्थ्य, पश्चाताप, सार्वजनिक हित, अन्याय के विरुद्ध किया जाता है।

(5) हड़ताल, अन्याय के विरुद्ध प्रदर्शन करने के लिये हड़ताल की जाती है। हड़ताल स्वेच्छा तथा आत्म शुद्धि के लिये आत्मोत्सर्ग है जो अनुचित मांगों पर अड़े वाले विरोधी का हृदय परिवर्तन करने वाली होती है। यह जनता का दुख दर्द प्रकट करने का माध्यम है। इसमें जोर जबरदस्ती का कोई स्थान नहीं है।

Scanned with CamScanner

(6) सामाजिक बहिष्कार : उन लोगों का समाज में बहिष्कार करना है जो जनमत की अवहेलना करते हैं और जनमत से सहयोग नहीं करते। गाँधी जी इसका प्रयोग मर्यादाओं में रह कर करने का सुझाव देते हैं। अर्थात विरोधी को आवश्यक सेवाओं आदि से वंचित करना।

(7) धरना : गाँधी जी ने अहिंसक धरने की बात की है। उसका कर्तव्य है कि जनमत को जगायें, उपयुक्त वातावरण बनायें, सामने वाले व्यक्ति को चेतावनी दे और उसका दिल बदल दे। इसका उद्देश्य विचारों को बदलना है न कि असभ्यता का व्यवहार करना, और जबरदस्ती करना या धमकी देना।

बहुत सारे विद्वानों ने गाँधी के इस विचार की आलोचना की है। Arthur Moore, सी० एम० केस, हडताल, बहिष्कार और उपवास को बल प्रयोग ही मानते हैं। इन्होंने उपवास को भी terrorism की संज्ञा दी है।